लगाये गये थे वोह वक़्त के साथ ख़तम हो गये क्यूंकि इस मामले में कोई श्ररिया नियम मोजूद नहीं है.इस्ल्याय अल मुआल्लाह के कबरून के निशाँ मिट गये हैं और किस कबर में कौन दफन है कुछ मालूम नहीं है.

इब्न जुबयर जब ५७८ हिजरी में यात्रा पे निकले तो उन ने अल मुआल्लाह के कब्रिस्तान के बारे में यह कहा :इस कब्रिस्तान में बोहत सारे विद्वान, औलिया सहाबा दफन है लेकिन उन की कब्रों पे जो उन के निशाँ थे वो मित्चुके है और उन सब के नाम इस शहर के वासियुं को भी याद नहीं है" .

V.नस्विकरय जानी वाले काररवाई जो कुछ यात्री कब्रिस्तान में करते हैं.

यात्रियों को ख़याल रखना चाहिये की वोह हजूर(ﷺ) की सुन्नत के मुताबिक चलें जब वो किसी कब्रिस्तान में हूँ .हम कुछ ऐसे चीजे लिख्राहैन हैं चीस से यात्रियों को दूर रहना चाहिय ताकि वोह गुन्हयों से बचे .

१.मरे हुये इंसान से मदद मांगना या मदद की पुहार लगाना

२.कब्र के सामने सर जुके के विनम्रता से खड़ा रहना बोहत गलत है ,कबर के वासियुं को अल्लाह के बराबर का दर्जा देना यह शिरिक है .

३ .कबर के वासियुं को सजदा करना या उन के सामने झुकना सही नहीं है.इस चीज़ की अनुमति सिर्फ अल्लाह के लिये है..

४ .कब्रिस्तान के अन्दर या बहार कबूतारून को फल खिलाना ये सूच के की इस से बरकत हासिल होगे .ये कार्रवाई कोई भी सहाबा या आप (ﷺ) नहीं करते थे.ये एक बिदाह है ,इस से हम अल्लाह के भेजे हुवे नियामत को बेइज़्ज़त करते है और रहाहगिर को बी इस से तकलीफ होती है.

५.मरने वाले की याद बोहत बड़ा गुनाह है ज़ोर ज़ोर से चिलाना या अपने आप को तकलीफ पोह्न्चान्य बोहत बड़ा गुनाह है

६ कबर की तरफ मुडके परार्थना करना हराम है .

७.एक सुर में कबर पे प्रार्थना करना गलत है.

८ कबर से धुल ,मिति उठाना इस उम्मीद में की इस से बरकत मिले गे या इस से तक्लीफ़ दूर हो गे गलत है .

९ मरने वाली के नाम पे ख़त लिकना और उस मेंतुम्हारी मदद करना करने के बारे मेंलिखना गलत है.

१०. धागा,कपडा या ताला कब्रिस्तान के दरवाज्य पे बंधना, ताकि तुम्हे बरकत हासिल हो गलत है.

११. कब्रिस्तान में मिलने वाली ज्हीज़ुं से बरकत की उम्मीद रखना गलत है.

१२ कबर पे पैसे या फूल रखना .

१३ अल फातिह:, अल इखलास और अल मुवाधातायं तीन बार पड़ना , और यासीन ,अल बकारक की आयतें पडने ताकि इस से मरने वाले को फ़ायदा मिले

१४ कटे हुये नाख़ून ,बाल,दंत दफनाना ताकि इस से बरकत हो.

१५ कबर पे परफ्यूम छिडकना हराम है.

VISION رؤية 2030
المملكة العربية السعودية
KINGDOM OF SAUDI ARABIA

المملكة العربية السعودية
الرئاسة العامة
لهيئة الأمر بالمعروف والنهي عن المنكر
الإدارة العامة للتوعية

अल-मुआल्लाह का कब्रिस्तान

इसको जांच किया है:
डा. शैख़ अब्दुस्सलाम बिन सालिम अस्सुहैमी

الرئاسة العامة لهيئة الأمر بالمعروف والنهي عن المنكر - الإدارة العامة للتوعية
هاتف ٠١١٤٩٠٨٤٨٦، فاكس ٠١١٤٩٠٨٥٦٦،
ص. ب ١٤٠٣٣ الرياض ١١٤٢٤ المملكة العربية السعودية
www.pv.gov.sa

هندي

I. विवरण

अल-मुआल्लाह का कब्रिस्तान हुज़ूर(ﷺ) के ज़माने से मक्काह के लोगों का मुख्या कब्रिस्तान रहा है . यह मस्जिद अल-हराम के उत्तर में ७००मीटर की दूरी पे अल हुजून में है .यह लगभग १००००० m^२ के क्षेत्र में फेला हुआ है .इस में मक्काह के हज़रून लोगों के अवेशष हैं जिन में वहां के रहने वाले और यात्री भी शामिल है .बोहत सारे सहाबा भी यहाँ पे दफ़न है.

II.. इस के गुण

इस बात के सिवा कोई और बात सच नहीं है की हुज़ूर(ﷺ) ने इस कब्रिस्तान के बारे में कहा है "कितना अच्छा कब्रिस्तान है " और बाकि बातें जैसे की " इस कब्रिस्तान से ७०००० लूग क़यामत के दिन उत्थैन गे और बिना किसी हिसाब के जानत में दाखिल हूँगी " सच नहीं है .

हुज़ूर(ﷺ) और उन के साथी हज करने के लिए आते थे और उन मेंसे कूई इस कब्रिस्तान पे प्रार्थना के लिए नहीं आता था. अब जो भी इस कब्रिस्तान पे जाना चाहता है उसे सिर्फ हुज़ूर (ﷺ) के बताई हयव तरीके अपनाने चाहिये.कोई ऐसे सबूत भी नहीं है की उम्माह की पुराने पीढी भी एस कब्रिस्तान पे प्रार्थना के लिए जाते थे .

III. अल मुआल्लाह की यात्रा करने के शिष्टाचार और वहां पे क्या पढना चाहियें

कब्रिस्तान की यात्रा करना हर जगह लिखा गया है और हुज़ूर(ﷺ) कहते हैं "कब्रिस्तान पे जाया करो क्यूंकि वोह तुममे आखिरत याद दिलाती है".

मक्काह में रहने वाले मरद इस या कोई भी यात्री कब्रिस्तान में इसे तरह जाया जिस तरह वोह बाकि कब्रिस्तानुं में जाते हैं.और महिलाओं के लिए कब्रिस्तान पे जाना सही नहीं है, आप (ﷺ) फरमाते हैं " अल्लाह उस महिला को माफ न करें जो कब्रिस्तान पे जाये घे".

कुछ हदीस कब्रिस्तान पे मुसल्मानूं के जाने के तीन फैडून के बारे में कहतें हैं:-

१. इसे लोगों को अपनी आखिरत याद आते है, जिस को याद कर के वोह अच्छे काम करतें हैं. आप(ﷺ) की इस बात से साफ़ होता है " कब्रिस्तान पे जाओ क्यूँ की इस से तुममे आखिरत याद आते है ."

२. एक मुस्लिम को कब्रिस्तान पे जाने से फ़ायदा मिलता है क्यूँ की येह एक सुन्नत है ,और हुज़ूर(ﷺ) भी कब्रिस्तानुं पे जाया करते थे.

३. एक मुसलमान अपने मुसलमान भाइयों की कब्रों पे जा कर और उन के लिए दुआ कर के उन पे दयालुता दिखता है दिखता है.आप (ﷺ) ने अपने साथियुं को सिखाया की वो कब्रिस्तान पे जाया और मरे हुवे मुसलमान भाइयों के लिए दुआ कराय इससे उन्हे को फ़ायदा मिले गा और जो वहां जाये गा उससे भी फ़ायदा मिले गा .

जब एक मुसलमान कब्रिस्तान में जाता है तो उसे आप(ﷺ) के बताये हु रास्ते पे चलना चाहिये और कहना चाहिये " अस-सलामु अलैकम डरा क़व्मिन मुमिनीन,व इन्ना इन-श-अल्लाह बी-कम लाहिकून.यारहम अल्लाह अल-मुस्ताक़दिमीना मिन्कुम वाल मुस्ताखिरीन. नसल अल्लाह लाना व लकुम अल-आफियाह" (एय माने वालू तुम पे शांति हो. ज़रूर इंशाल्लाह हम भी तुम्हारे साथ जुड़ जायें गे .अल्लाह तुम्हारे से पहले और बाद में जाने वऊलूं पे रहम कराय .हम अल्लाह से दुआ करतें है की वो तुम्हारा और हमारा ख़याल रखे), यही लफ्ज़ मरने वालों के लिए इस्तमाल किये गये थे.

IV.कबर पे मरने वाले का नाम लिखना जो उस कबर में दफ़न है .

इस में कोई शक नहीं है की अल-मुआल्लाह मक्काह के लोगों को दफनाने की जगह है और कई सारे सहाबा यहाँ पे दफन है . और हमें यह भी पता है की इस्लाम मैं कबर माय निशाँ रखना ताकि उस मई दफन हुआ इन्संन के बारे में मालूम हो सके ,गलत है. सिर्फ एक पथर रखना सही है ताकि पता चल सके की यहाँ पे कबर है.मगर फिर उस निशाँ पे नकाशी करना और जानकारी लिखना गलत है.जाबिर (ﷺ) से रिवायत है की :में ने अप्प (ﷺ) को ये केहते हुआ सुना की कबर पे बैठना या कबर पे पलस्तर करना या लिखना गलत हैसा. इस से ये साबित हूट है की जो भी निशान कबर पे